

Criminological Insights
By
Dr. Mridul Srivastava

बंगाल का अधिग्रहण: व्यापारी से शासक तक

ईस्ट इंडिया कंपनी के राजस्व प्रयोग और
एक साम्राज्य का जन्म (1760-1769)



द फिफ्थ रिपोर्ट (1812) के
विस्तृत अध्ययन पर आधारित

ईस्ट इंडिया कंपनी: बंगाल की राजस्व व्यवस्था और दीवानी का अधिकार (1760-1770)

1765 की दीवानी के बाद बंगाल में प्रशासनिक और राजस्व बदलावों का एक दृश्य विश्लेषण।

दीवानी का अनुदान और सत्ता का परिवर्तन (1765)



मुगल सम्राट शाह आलम II

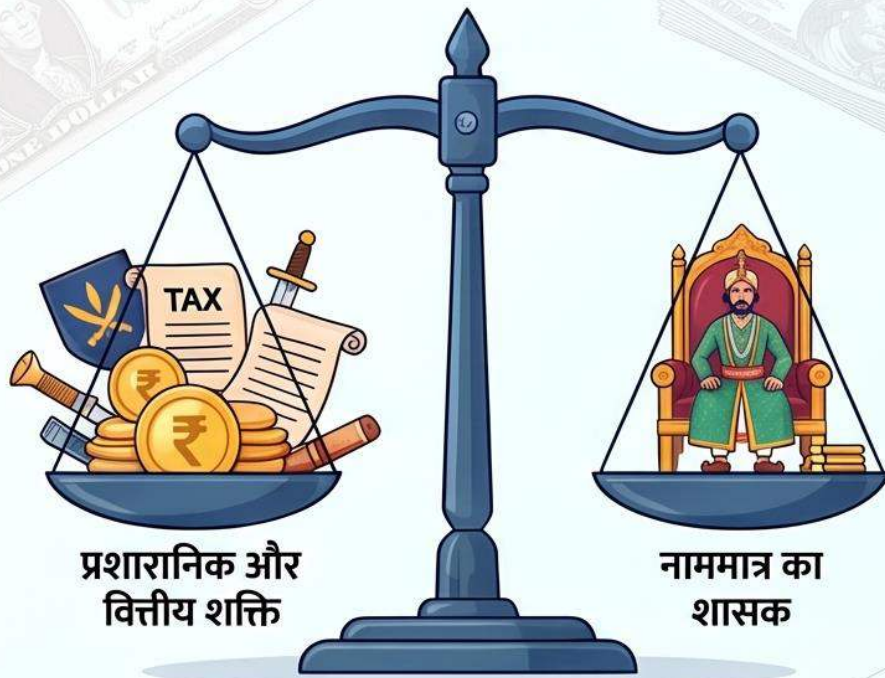
राजस्व प्रबंधन और प्रशासनिक प्रयोग



राजस्व की 'फार्मिंग' प्रणाली
अधिकार सबसे उंची बोली लगाने वालों को दिया जाने लगा।



वर्धमान (Burdwan) में प्रत्यक्ष प्रशासन
वर्धमान में अधिकारियों ने सीमे तौर पर राजस्व और न्याय प्रणाली का निरीक्षण किया।



प्रशासनिक और वित्तीय शक्ति

नाममात्र का शासक

दोहरी सरकार

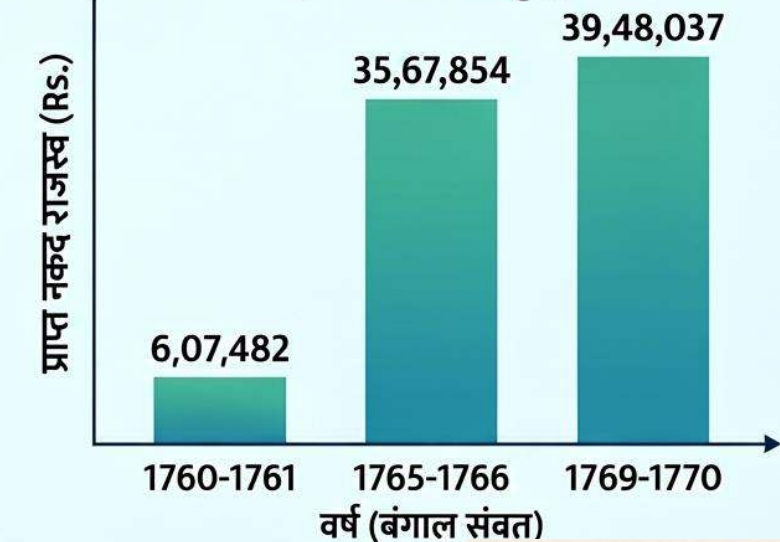


1765-1772 के बीच
मुर्शिदाबाद के राजस्व संग्रह में वृद्धि

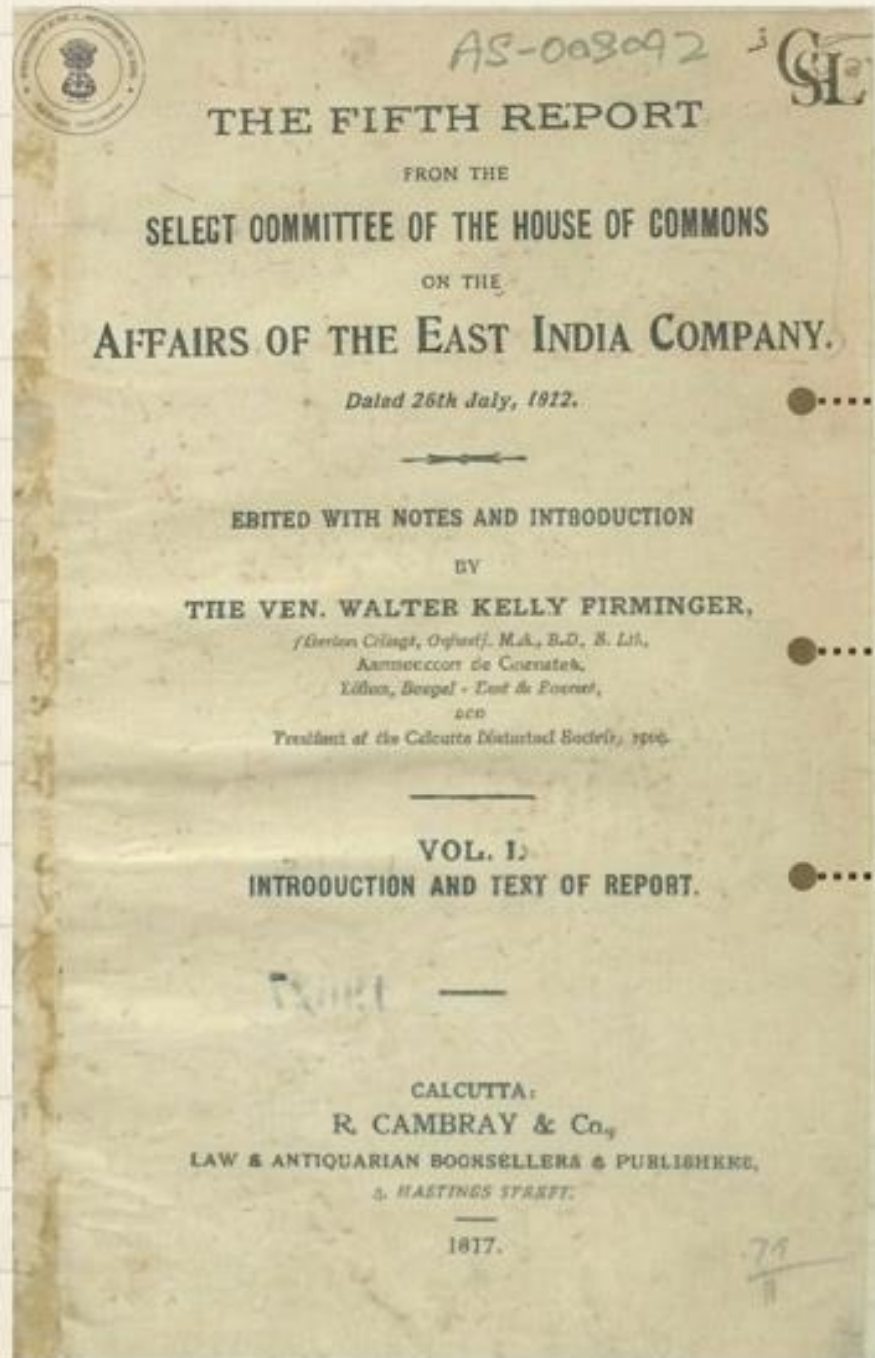


स्थानीय जमींदारों का प्रभाव
कंपनी ने वास्तविक कीमत जानने के लिए जमींदारों के पारंपरिक अधिकारों में कटौती की।

वर्धमान जिले में नकद राजस्व प्राप्ति
कंपनी के आगमन के बाद वर्धमान में नकद राजस्व में भारी वृद्धि।



'द फिफ्थ रिपोर्ट' (1812): साम्राज्य का कच्चा चिट्ठा

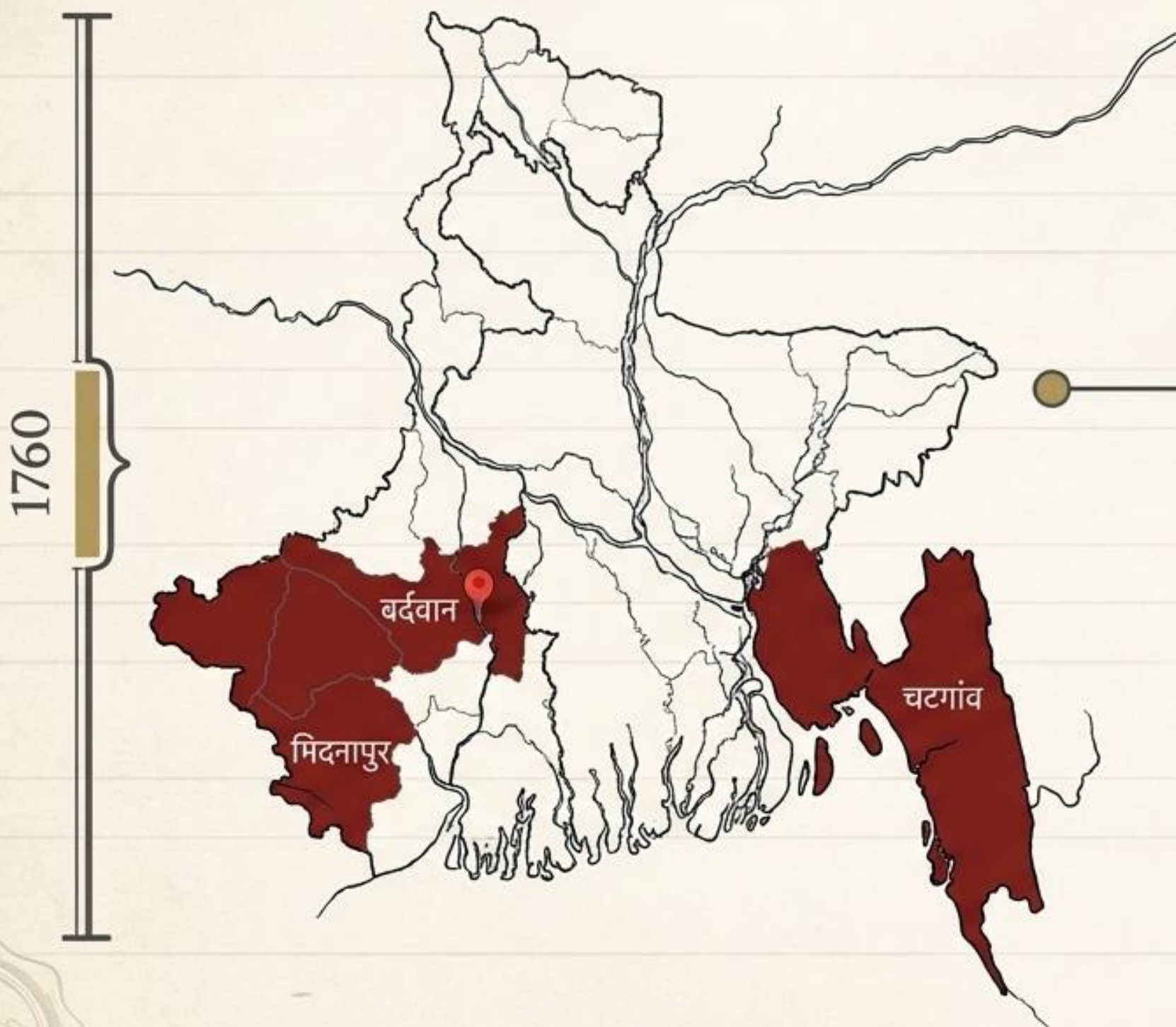


संसदीय ऑडिट: ब्रिटिश संसद द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी (EIC) के मामलों और उनके राजस्व कुप्रबंधन की विस्तृत जांच।

आर्थिक पतन का दस्तावेज़: बंगाल की पारंपरिक अर्थव्यवस्था के पतन और कंपनी की प्रारंभिक नीतियों की विफलता का प्राथमिक स्रोत।

आधुनिक भू-राजस्व की नींव: भारत के आधुनिक भूमि राजस्व इतिहास और प्रशासनिक ढांचे को समझने का सबसे प्रामाणिक आधार।

प्रयोगशाला: 1760 के 'सीडेड लैंड्स'



पृष्ठभूमि:

1765 की दीवानी से पहले, नवाब मीर कासिम ने कंपनी को अपनी सेना का खर्च उठाने के लिए **बर्दवान, मिदनापुर और चटगांव** सौंपे।

उद्देश्य और प्रतिरोध:

ये क्षेत्र कंपनी के लिए 'राजस्व निष्कर्षण' की पहली प्रयोगशाला बने। कंपनी ने राजस्व के लिए जंगल ज़मींदारों और चुआरों (Chuars) के विद्रोहों को बेरहमी से कुचला।

निष्कर्ष:

यहां से कंपनी ने सीखा कि सैन्य बल के बिना नियमित राजस्व वसूली संभव नहीं है।



ज़मींदारी बनाम 'नीलामी' व्यवस्था (The Outcry)

पारंपरिक व्यवस्था (नवाब)

वंशानुगत ज़मींदार, जिनका स्थानीय रैयतों (किसानों) से गहरा जुड़ाव था।

राजस्व दरें मध्यम थीं और अकाल या सूखे के समय रियायत दी जाती थी।

कृषि के दीर्घकालिक विकास पर ध्यान।

कंपनी का 'इज़ारदारी' प्रयोग

सार्वजनिक नीलामी (The Outcry) - ज़मीन सबसे ऊंची बोली लगाने वाले को ठेके पर दी गई।

शहरी सट्टेबाज़ों और बनियों का प्रवेश, जिनका ज़मीन से कोई नाता नहीं था।

अल्पकालिक पट्टे (Leases) और निर्मम वसूली; कृषि में कोई निवेश नहीं।



AUDIT

AUDIT

AUDIT STAMP

बर्दवान का संकट: मुनाफ़े की अंधी दौड़

कंपनी की उम्मीद

अधिकतम राजस्व के लिए ज़मीनों की सार्वजनिक नीलामी। कंपनी को लगा कि प्रतिस्पर्धा से उनका मुनाफ़ा कई गुना बढ़ जाएगा।

ज़मीनी हकीकत

- ⚠ रैयतों का पलायन: ठेकेदारों (Ijaradars) के अमानवीय अत्याचारों के कारण किसानों ने खेत छोड़ दिए।
- ⚠ बंजर ज़मीनें: कृषि पूरी तरह बर्बाद हो गई।
- ⚠ राजस्व में भारी गिरावट: अनुमानित राजस्व और वास्तविक वसूली के बीच भारी अंतर आ गया।

सबक: बिना सुरक्षा और निवेश के, केवल बलपूर्वक वसूली का कॉर्पोरेट मॉडल बुरी तरह विफल रहा।

1765 की दीवानी: संप्रभुता का कानूनी दस्तावेज़

इलाहाबाद की संधि के तहत मुगल सम्राट शाह आलम द्वितीय ने कंपनी को बंगाल, बिहार और उड़ीसा का राजस्व वसूलने का अधिकार (दीवानी) सौंप दिया।

[कुल भू-राजस्व] (बंगाल, बिहार, उड़ीसा का अपार धन)

(नवाब की पेंशन: 53 लाख रुपये +
सम्राट की श्रद्धांजलि: 26 लाख रुपये)

कंपनी का पूर्ण और शुद्ध मुनाफ़ा

कंपनी के पास अब एक पूरे देश का राजस्व था, लेकिन प्रशासन की कोई ज़िम्मेदारी नहीं।

द्वैध शासन: क्लाइव का "मुखौटा"

नवाब ('द शैडो')

निज़ामत (Nizamat) का
अधिकार: पुलिस, न्याय और
नागरिक प्रशासन।

वास्तविकता: नवाब के पास न तो
सेना थी और न ही इस प्रशासन
को चलाने के लिए धन।

ईस्ट इंडिया कंपनी (‘द पावर’)

दीवानी (Diwani) का अधिकार:
पूरे राज्य के वित्त और सेना पर
पूर्ण नियंत्रण।

वास्तविकता: अधिकतम राजस्व
प्राप्त किया, लेकिन जनता के
कल्याण के प्रति शून्य जवाबदेही।

सत्ता अंग्रेज़ों के पास थी, और ज़िम्मेदारी नवाब के पास।

AUDIT



“मुखौटा” क्यों ज़रूरी था?

“

यदि कंपनी प्रत्यक्ष रूप से सत्ता संभालती है, तो वह मुखौटा उतार फेंकने जैसा होगा...

जिससे विदेशी शक्तियां और ब्रिटिश संसद तुरंत हस्तक्षेप करेंगी।



”



कूटनीतिक कारण

विदेशी शक्तियों का डर: डच और फ्रांसीसी कंपनियां सीधे तौर पर ब्रिटिश संप्रभुता को स्वीकार नहीं करतीं और युद्ध भड़क सकता था।



घरेलू कारण

ब्रिटिश संसद से बचाव: यदि कंपनी का अपार धन खुले तौर पर सामने आता, तो ब्रिटिश सरकार कंपनी के मामलों में दखल देती और उनके मुनाफे पर नियंत्रण कर लेती।

नायब दीवान और भ्रष्टाचार का चक्र

ईस्ट इंडिया कंपनी: राजस्व के लक्ष्य तय करती है।

नायब दीवान (मुहम्मद रज़ा खान): कंपनी के लिए प्रशासन और वसूली का चेहरा।

अमिल और मुतसद्दी (स्थानीय एजेंट): वास्तविक वसूली करने वाले अधिकारी।

रैयत (किसान): सबसे निचला स्तर, जो शोषण का शिकार होता है।

कंपनी को ज़मीन की वास्तविक उपज का कोई ज्ञान नहीं था। इन एजेंटों ने भारी भ्रष्टाचार किया, किसानों का शोषण किया, और असली मुनाफ़ा कंपनी और नवाब दोनों से छिपा लिया।

AUDIT

धन का निष्कासन: बंगाल का आर्थिक पतन

रिचर्ड बेचर की 1769 की रिपोर्ट

चरण 1: कंपनी बंगाल के किसानों से भारी भू-राजस्व (सिक्का रुपये में) वसूलती है।



चरण 2: इसी राजस्व का उपयोग भारतीय वस्तुओं (कपास, रेशम) को खरीदने ('Investments') के लिए किया जाता है।



चरण 3: ये वस्तुएं भारी मुनाफे पर यूरोप निर्यात की जाती हैं।



चरण 4: परिणाम: पहले विदेशी व्यापारी सोना-चांदी लेकर आते थे, अब बंगाल का ही पैसा वापस यूरोप जा रहा है।



मुद्रा (Specie) का पूर्ण निष्कासन: बाज़ार में नकदी खत्म हो गई, जिससे पूरी अर्थव्यवस्था ठप पड़ गई।



IMPERIAL LEDGER

ज़मीनी हकीकत: एक "विनाशकारी योजना"

अमिलों का आतंक

अमिलों का ज़मीन या किसानों से कोई स्वाभाविक जुड़ाव नहीं था। उनका एकमात्र उद्देश्य अपनी नौकरी रहने तक अधिकतम धन निचोड़ना था।

न्याय का अभाव

यदि कोई किसान शोषण की शिकायत करना चाहता, तो उसे न्याय मांगने के लिए उन्हीं अधिकारियों के पास जाना पड़ता था जो उसका शोषण कर रहे थे।

उत्पादन का पतन

मनमानी सत्ता के तहत, किसानों ने खेती करना ही छोड़ दिया, क्योंकि उनकी मेहनत का फल केवल शोषकों की जेब में जा रहा था।



वेरेल्स्ट का मूल्यांकन: एक व्यापारी की सीमाएं

“हम अब केवल व्यापारी नहीं बने रह सकते।
यदि हमें अपना राजस्व सुरक्षित रखना है, तो
हमें रैयत (किसान) की रक्षा करनी होगी और
कृषि को प्रोत्साहित करना होगा।”

- हैरी वेरेल्स्ट (गवर्नर, बंगाल)

नीतिगत बदलाव

समस्या: परोक्ष शासन (Indirect Rule) से राजस्व का स्रोत ही नष्ट हो रहा था।

अहसास: एक कॉर्पोरेशन केवल तब तक मुनाफ़ा कमा सकता है, जब तक उत्पादन करने वाली प्रजा जीवित और समृद्ध हो।

समाधान: कंपनी को पर्दे के पीछे से निकलकर सीधे तौर पर नागरिक प्रशासन की ज़िम्मेदारी लेनी होगी।



IMPERIAL



1769: प्रत्यक्ष शासन की ओर पहला कदम



'सुपरवाइज़र्स' की
नियुक्ति

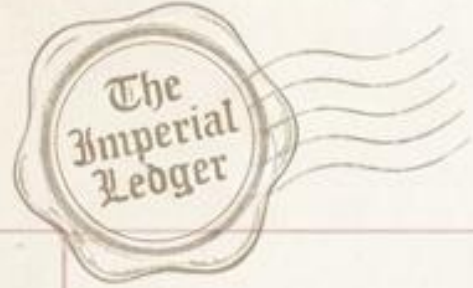
नया जनादेश (Mandate):

1. ज़मीन के ऐतिहासिक रिकॉर्ड की जांच करना।
2. किसानों को जबरन वसूली से बचाना।
3. बाज़ार और व्यापार को नियंत्रित करना।
4. बाढ़ासों और चालका को पयदित करना।

निष्कर्ष: यह ब्रिटिश राजशाही के निर्माण का पहला आधिकारिक प्रशासनिक कदम था।



सिंथेसिस: कंपनी से 'स्टेट' तक का सफर



व्यापारिक लालच (1760-1764)

नीति: अधिकतम अल्पकालिक मुनाफे के लिए ज़मीनों की नीलामी।
नतीजा: कृषि का विनाश और राजस्व में भारी कमी।



मुखौटे का शासन (1765-1768)

नीति: दीवानी का अधिग्रहण, लेकिन ज़िम्मेदारी से बचने के लिए नवाब का 'द्वैध शासन'।
नतीजा: भयंकर भ्रष्टाचार, धन का निष्कासन (Drain of Wealth) और प्रशासनिक पतन।



संप्रभु वास्तविकता (1769 के बाद)

नीति: राजस्व बचाने की मजबूरी में प्रत्यक्ष नागरिक प्रशासन की शुरुआत।
नतीजा: एक विशुद्ध व्यापारिक कंपनी का आधिकारिक तौर पर 'शासक' (Sovereign State) में परिवर्तन।



निष्कर्ष: एक साम्राज्य का जन्म

'द फिफ्थ रिपोर्ट' यह स्पष्ट करती है कि भारत में ब्रिटिश साम्राज्य किसी महान राजनीतिक योजना (Grand Political Design) का परिणाम नहीं था।

बल्कि, यह ईस्ट इंडिया कंपनी के कॉर्पोरेट लालच और उनके द्वारा पैदा किए गए आर्थिक संकट को संभालने के लिए उठाया गया एक मजबूर प्रशासनिक कदम था। व्यापारिक मुनाफे को बचाने की ज़िद ने ही अंततः एक राज्य को जन्म दिया।

[End of Document / Ledger Closed]